

## प्रेमाभिव्यक्ति से परिपूर्ण : 'रोशनी दर रोशनी'

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

आधुनिकता तथा बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव ने भारतीय समाज की सामाजिकता तथा आर्थिक संरचना को प्रभावित करने के साथ-साथ साहित्य में अनेक विमर्शों को भी गहराई से प्रभावित किया है | एक ओर भौतिकवाद ने अपनी जड़ें जमाना शुरू कीं तो दूसरी ओर अस्तित्ववाद, मानवतावाद तथा संरचनावाद जैसे अनेक विमर्शों पर चर्चा-परिचर्चाएं होने लगीं | परिणामस्वरूप यौन-शोषण, अनमेल विवाह, विधवा विवाह आदि अनेक विषयों पर खुलकर बात होने लगीं | बलात्कार, भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध आज भी समाज में व्याप्त हैं | इन सब विसंगतियों तथा विडम्बनाओं के चलते विभिन्न लेखकों ने स्त्री से सम्बंधित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सामने रखा जिससे स्त्री विमर्श को दिशा मिली |

इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राचीन काल से ही धर्म तथा पुरुष-प्रधान समाज ने स्त्री की स्थिति को निर्धारित किया है | इसमें भी कोई दोराय नहीं है कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक उत्पीड़न तथा सामाजिक तिरस्कार के बावजूद स्त्री लेखिकाओं ने स्वयं को स्थापित किया है | उन्होंने न केवल अपनी भावाभिव्यक्ति की है

अपितु समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियों को भी आइना दिखाया है | इस सूची में मीरा, राजेन्द्रबाला घोष (बंग महिला) महादेवी, मन्नू भंडारी, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, अलका सरावगी, अनामिका, मनीषा कुलश्रेष्ठ, दिव्या माथुर, नमिता श्रीवास्तव इत्यादि | इन लेखिकाओं ने कथा-साहित्य तथा काव्य में समकालीन जीवन के उन अनछुए पहलुओं को उजागर किया है जिनको एक लेखक शायद इतनी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाता |

साहित्य मानव के भावों और विचारों की समष्टि है | साहित्य में सामाजिक प्रभाव का प्रतिफलन दिखाई देता है | समाज और साहित्य का अनन्य सम्बन्ध उनके निरंतर प्रवाह की गति का बोधक होता है | इसी कारण युगों की विशिष्टता साहित्य में प्रतिबिंबित होती है | समाज की स्थिति का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है और इस प्रभाव का यथा रूप मानव को उसकी वास्तविकता से परिचित करता है

एक समय ऐसा था जब पुरुष रचनाकार स्त्री जीवन की वेदना तथा पीड़ा को व्यक्त करने का काम करता था परन्तु गीता ठाकुर जैसी अनेक लेखिकाओं के अपनी भावाभिव्यक्ति स्वयं की और जीवन से सम्बंधित विभिन्न विसंगतियों तथा विडम्बनाओं

को भी चित्रित किया है | वास्तव में स्त्री-लेखन के इतिहास में लेखिकाओं की कमी नहीं है | मीराबाई और आंडाल से लेकर महादेवी तक एक लम्बी परंपरा है | वर्तमान समय में विभिन्न दृष्टियों तथा कोणों से लेखिकाओं के अपनी संवेदनाओं तथा विडम्बनाओं को अभिव्यक्ति करने का काम किया है | बाजारवाद की दौड़ में स्त्री की ओर इशारा करते हुए सुधा अरोड़ा की कविता 'अकेली औरत' द्रष्टव्य है-

"इक्कीसवीं सदी की यह औरत / हांड मास की नहीं रह जाती / इस्पात में डल जाती है / और समाज का सदियों पुराना / शोषण का इतिहास बदल डालती है / बाजार के साथ बाजार बनती / यह सबसे सफल औरत |"<sup>1</sup>

इस प्रकार समय समय पर लेखिकाओं ने समाज और संस्कृति में व्याप्त प्रथाओं एवं आदर्शों का बखूबी चित्रण किया है | नारी जीवन में हो रही उथलपुथल तथा संत्रास को भी लेखिकाओं ने अभिव्यक्त किया है | इस सन्दर्भ में किरण अग्रवाल की कविता को देखना समीचीन होगा-

"कि पक्षी अब उड़ते नहीं महज़ फडफडाते हैं / और पेड़ पेड़ नहीं ठूँठ नाम से जाने जाते हैं / कि कोख कोख नहीं जलता हुआ

रेगिस्तान है / और हृदय संवीदना शून्य, बर्फ उगलता एक शमशान  
है / कि आज़ादी शब्द हमारे शब्दकोश में ही नहीं |”<sup>2</sup>

‘रोशनी दर रोशनी’ गीता ठाकुर रोशनी का एक सशक्त गज़ल संग्रह हैं | आपका जन्म 11 अक्टोबर 1952 को नई दिल्ली में हुआ | दिल्ली विश्विद्यालय से ग़जवेशन करने के बाद उनकी शादी एक व्यापारी दीपक ठाकुर से हो गई | रोशनी जी का पहला काव्य संग्रह अप्रैल 1994 में प्रकाशित हुआ | ‘रोशनी दर रोशनी’ उनकी दूसरी प्रकाशित रचना है | आप लिखती हैं- “मैंने जब लिखना शुरू किया तो मुझे हैरानी भी हुई और खुशी भी कि मैं जो कहना चाहती हूँ वो शायरी में ढलता जा रहा है | घर के लोगों और दोस्तों के इसरार पर मैंने फिर से ग़ज़लों को किताबी सूरत में लाया | अब शायरी ही मेरे जज़्बात का आइनादार हो गई है | उनका कहना है-

रात की गोद में ‘रोशनी’ / दूर तक झिलमिलाती रही”<sup>3</sup>

‘रोशनी दर रोशनी’ एक ग़ज़ल संग्रह है | हमारे सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हिंदी में ग़ज़ल की अवधारणा किस प्रकार हुई? हिंदी के कई विद्वानों एवं ग़ज़लकारों की यह अवधारणा बनी हुई है कि हिंदी में ग़ज़ल की अवधारणा उर्दू ग़ज़ल के प्रभाव के कारण हुई है। कई शोधकर्ता

भी इस बात का समर्थन करते हैं। लेकिन हिंदी में कुछ विद्वान ऐसे भी हैं जो यह मानते हैं कि हिंदी में ग़ज़ल की अवधारणा उर्दू के प्रभाव के कारण नहीं हुई बल्कि फ़ारसी ग़ज़ल के प्रभाव के कारण हुई। वैसे यह बात सत्य भी लगती है क्योंकि जब हम अमीर खुसरो से हिंदी ग़ज़ल का प्रारंभ मानते हैं तब यह निःसंदेह कह सकते हैं कि हिंदी ग़ज़ल की अवधारणा सीधे फ़ारसी से हुई है क्योंकि अमीर खुसरो फ़ारसी में ग़ज़ल लिखते थे। हिंदी साहित्य के आदिकाल को हम हिंदी ग़ज़ल साहित्य का प्रारंभिक काल कह सकते हैं क्योंकि इस काल में ही हिंदी ग़ज़ल के बीज बोने का ऐतिहासिक दायित्व अमीर खुसरो ने निभाया। ग़ज़ल मूलतः अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "प्रेमिका से वार्तालाप" .फ़ारसी और फिर उर्दू में यह एक कविता विशेष है जिसमें एक ही रदीफ़ और काफ़िए में 11 शेर होते हैं | हर शेर का विषय अलग होता है | पहला शेर 'मत्ला' कहलाता है जिसके दोनों मिस्रे सानुप्रास होते हैं और अंतिम शेर मक्ता होता है जिसमें शायर अपना उपनाम लगता है | इस रूप में यह विधा प्रेमाभिव्यक्ति का माध्यम है | इसी प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त और मार्मिक चित्रण 'रोशनी दर रोशनी' ग़ज़ल संग्रह में मिलता है |

गीता ठाकुर 'रोशनी' जी की ग़ज़लें रदीफ़-काफ़िया की कसौटी पर सही उतरती हैं | रदीफ़-काफ़िया की गहरी सूझ-बूझ होने के

कारण रोशनी जी की गज़लें स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण बन पड़ी हैं | जो गज़लकार रदीफ़-काफिया के प्रति जितना सतर्क होगा उसकी गज़ल उतनी ही प्राभावशाली हो जाती हैं | रोशनी जी अपने प्रेमी के साक्षात्कार को यूँ बयान करती हैं- अब तो हटा लो हुसन के चेहरे से ये नकाब / कोई तरस के रह गया दीदार के लिए |<sup>4</sup>

रोशनी जी को अपने महबूब का चेहरा चाँद जैसा लगता है जिसका चित्रण वे कई स्थलों पर करते हैं- घटाओं में महताब छुपा है ऐसे / तेरा चेहरा तेरी जुल्फों में जैसे |<sup>5</sup>

एक अन्य स्थल पर- हंसी चाँद पे छा रही है गज़ब है / ये जुल्फ़े काली घटाएं तुम्हारी |<sup>6</sup>

यद्यपि रोशनी जी की सभी गज़लों में अपने प्रेमी के प्रति अपार स्नेह, त्याग, बलिदान ही दिखाई देता है परन्तु कहीं-कहीं पर निराशा, हताशा का भी चित्रण मिलता है-

हसीं जितने हो उतने ही संगदिल हो / किसी ने न देखी जफ़ाँ तुम्हारी |<sup>7</sup>

एक अन्य स्थल पर देखिए-

उजड़ गयी है प्यार की दुनियां तेरे बगैर ऐ हमदम

तेरी प्यारी सूरत को बस दिल में बसा रखा है |<sup>8</sup>

रोशनी जी ग़ज़लों का सीधा सम्बन्ध करुणा, दया, मानवता, त्याग, बलिदान इत्यादि से है | उनका विश्वास है कि जिस व्यक्ति का मन जितना कोमल और सरल होगा वह उतना ही परोपकारी होगा | परन्तु आज दुर्भाग्य से लोगों ने अपने हृदय में करुणा की जगह कठोरता बसा ली है | बाजारवाद की दौड़ में प्रत्येक व्यक्ति पैसे के पीछे पड़ गया है तथा उद्योगीकरण के दौर में व्यक्ति एक मशीन मात्र रह गया है | वे स्वयं को भूल गया है जिसका सुन्दर शब्दों में इस प्रकार चित्रण हुआ है-

हर आदमी जीने की अदा भूल गया है

शायद बनाके हमको खुदा भूल गया है |

पैसे को खुदा मानते हैं ज़र के ये गुलाम

हर शख्स जैसे खौफे खुदा भूल गया है |<sup>9</sup>

**निष्कर्षतः** कवियत्री आम आदमी की भलाई के पक्ष में है | अपने सुख की अपेक्षा वे दूसरों के सुख में अपना सुख मानते हैं | अपने ग़ज़लों के शेरों के माध्यम से उन्होंने सामान्य जन की पीड़ा का भी चित्रण किया है | उनके शरों में रोमानियत झलकती है तथा प्रेमाभिव्यक्ति का भी सशक्त और सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है |

## सन्दर्भ सूची

1. अंजु लता गौड़ा, हिंदी एकांकी में जीवन मूल्य', शलभ प्रकाशन, 1994, पृ. 43
2. डॉ. अंजुलता, स्त्री लेखन, हिंदी विभाग तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पृ. 15
3. वही, पृ. 16
4. गीता ठाकुर 'रोशनी', रोशनी दर रोशनी, पृ. 33
5. वही, पृ. 21
6. वही, पृ. 23
7. वही, पृ. 30
8. वही, पृ. 30
9. वही, पृ. 38
10. वही, पृ. 16

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

फोन नं० 9622495937